अध्याय 20

प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था

बच्चों! आपने यह तो सुना ही होगा कि भारत कभी सोने की चिड़िया रहा है। आपने कभी सोचा है कि इसे 'सोने की चिड़िया' क्यों कहते हैं? प्राचीन भारत में उद्योग एवं व्यापार अपने चरमोत्कर्ष पर थे। अपने देश में निर्मित वस्तुओं की किस्म अच्छी होने के कारण उसकी विदेशों में बहुत माँग रहती थी। इससे यहाँ का बहुत–सा माल विदेशों में निर्यात किया जाता था। निर्यात के बदले मुद्रा के रूप में सोना व चाँदी लिया जाता था। भारत में ही अच्छे माल की उपलब्धता के कारण अपने देश को अन्य देशों से माल आयात नहीं करना पड़ता था। इससे विदेशों से प्राप्त सोना–चाँदी भारत में ही रहता था। दुनिया भर का सोना भारत में एकत्र होने लगा। धीरे–धीरे यहाँ पर सोने के भण्डार बढ़ने लगे। भारत अन्य देशों के मुकाबले सम्पन्न होने लगा। यही कारण था कि उस समय के भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाने लगा।

इस पाठ में हम पढेंगे कि प्राचीन काल में भारत के उद्योग धन्धे व व्यापार विकसित थे। किन–किन देशों के साथ हमारे व्यापारिक सम्बन्ध थे और अंग्रेजों ने किस तरह से हमारी उन्नत अर्थव्यवस्था को तहस–नहस कर दिया? मुगल शासन के अन्त में एवं ब्रिटिश शासन की शुरुआत के समय भारत की अर्थव्यवस्था यूरोप की अर्थव्यवस्था से कई मायनों में अच्छी थी। आईये, हम इस सम्बन्ध में अध्ययन करें।

गतिविधि

मित्रों के साथ चर्चा करें–

प्राचीन भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता है ?

कृषि की स्थिति

प्राचीन भारत में कृषि एवं संबंधित कार्य लोगों का मुख्य व्यवसाय था। यहाँ के गाँव समृद्ध थे। माना जाता है कि खेती करने की तकनीक दुनिया ने भारत से सीखी। भारतीय किसानों ने गेहूँ की खेती इंग्लैण्ड व यूरोप से कई शताब्दी पूर्व प्रारम्भ की थी। अंग्रेज जब भारत आये तो यहाँ के कृषि विकास को देखकर आश्चर्य चकित थे।

> इंग्लैण्ड में सामान्य रुप से प्रचलित धारणा जिसे भारत में अक्सर व्यक्त किया जाता है कि भारतीय कृषि पुराने ढंग की व पिछड़ी है, पूरी तरह गलत है। भारतीय किसान औसत अंग्रेज किसान की तरह अच्छा है और कुछ मायने में तो उससे भी श्रेष्ठ है। **–डॉ. वॉयलेकर 1889 ई.**

जितने अच्छे ढंग से यहाँ का किसान खेती को खरपतवार से साफ रखता था, मिट्टी, फसल की बुआई और कटाई के बारे में जानकारी रखता था, वह अन्यत्र देशों में देखने को नहीं मिलता था। यही कारण है कि यहाँ की कृषि अन्य देशों की तुलना में बहुत उन्नत अवस्था में थी। जनता के लिए धन–धान्य व उद्योगों के लिए कच्चा माल यहाँ की कृषि से पर्याप्त मात्रा में मिल जाता था। चीनी, नमक, चाय, अफीम, कपास, मसाले, नील, रेशम आदि का उत्पादन अच्छी मात्रा में होता था एवं विदेशों में इनकी माँग रहती थी। यहाँ कपास व गन्ने की खेती भी पर्याप्त मात्रा में की जाती थी।

गतिविधि

1. प्राचीन काल के कृषि उत्पादों की सूची बनाइये।
2. "भारतीय किसान कुछ मायने में एक औसत अंग्रेज किसान से भी अच्छा है।" यह वाक्य किसने कहा? उसके कारणों पर चर्चा करें।

उद्योग

यद्यपि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी, फिर भी उस समय इस देश में उद्योगों का विकास हो चुका था। अब तो लगभग सभी लोग मानते हैं कि भारत में अंग्रेजों के आने से पहले यहाँ के उद्योगों के विकास का स्तर यूरोप में हुए औद्योगिक विकास के स्तर से ऊँचा था। उस समय भारत में दो तरह के उद्योग प्रचलित थे –(1) गाँवों में स्थापित कुटीर उद्योग एवं (2) शहरों में स्थापित बड़े उद्योग। ग्रामीण उद्योग बहुत छोटे पैमाने पर कार्य करते थे तथा वे स्थानीय माँग को पूरा करते थे। नगरों में स्थापित उद्योग विस्तृत बाजारों की माँग को पूरा करते थे। पानी के जहाज बनाने की कला में भारत यूरोप से आगे था। ईसा की उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ तक जहाज बनाने का उद्योग इंग्लैण्ड की अपेक्षा भारत में अधिक विकसित था। यहाँ के जहाज न केवल गुणवत्ता की दृष्टि से बल्कि माल ढोने की क्षमता की दृष्टि से भी उन्नत अवस्था में थे।

भारतीय औद्योगिक आयोग की रिपोर्ट 1916

जिस समय आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था के उद्‌गम, पश्चिमी यूरोप में असभ्य जातियाँ निवास करती थी, भारत अपने शासकों के वैभव तथा शिल्पकारों की उच्च कोटि की कला हेतु विख्यात था।

बंगाल पर अंग्रेजों की विजय से पहले 1750 ई. के आस–पास भारत पूरी दुनिया में कपड़ा उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी देश था। भारतीय कपड़े अपनी गुणवत्ता व बारीक कारीगरी के लिए दुनिया में मशहूर थे। दक्षिणी–पूर्वी एशिया (जावा व सुमात्रा आदि) तथा पश्चिम एवं मध्य एशिया में इन कपड़ों की भारी माँग थी।

गतिविधि

नक्शा देखकर नोट बुक में लिखें–

- सफेद कपड़े का उत्पादन कहाँ पर होता था?
- चेक और धारीदार कपड़े का उत्पादन कहाँ–कहाँ होता था ?
- शिंट्ज (छींट छापेदार सूती कपड़े) के केन्द्र कौन–कौन से हैं ?
- सिल्क का उत्पादन भारत में कहाँ–कहाँ पर होता था ?

मानचित्र पैमाने पर आधरित नहीं है

कपास और रेशम के महीन कपड़े, विशेष कर ढाका की मलमल की साड़ी दुनिया में माँग रहती थी। बंगाल के सूती कपड़े यूरोपीय कम्पनियों द्वारा भारी मात्रा में बाहर भेजे जाते थे। बंगाल सूती व रेशमी वस्त्र उद्योगों का मुख्य केन्द्र था। बंगाल के बाहर लखनऊ, अहमदाबाद, नागपुर और मथुरा सूती उद्योगों के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। पीतल, ताम्बे और कांसे की वस्तुओं का उत्पादन सर्वत्र किया जाता था। सोने व चाँदी के आभूषण, रत्न व्यवसाय, संगमरमर हाथीदाँत और शीशे पर कलापूर्ण कार्य आदि अन्य महत्वपूर्ण उद्योग थे। लोहा उद्योग उन्नीसवीं शताब्दी में काफी विकसित था। 'विल्सन' ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि ''भारतीयों को अनादि काल से लोहे को गलाने की कला का ज्ञान रहा है।'' दिल्ली (महरौली) में कुतुबमीनार के परिसर में खड़ा लौह स्तम्भ लगभग 1500 वर्ष पूर्व बनाया गया था। आश्चर्य की बात है कि इतने वर्षों बाद भी इसमें जंग नहीं लगा है। ईसवाल (उदयपुर) में मौर्यकालीन लोह प्रगलन भट्टियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

महरौली का लौह स्तम्भ

व्यापार

अंग्रेजों के भारत आगमन से पहले हमारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बहुत समृद्ध था। भारत दूसरे देशों के साथ व्यापार ईसा से 2000 वर्ष पूर्व भी करता रहा है। मिश्र में 'मम्मीज' को भारतीय मलमल में लपेटकर रखा गया है, जो इस बात का सबूत है कि प्राचीन काल में मिश्र भारत से कपड़े का आयात करता था। यूनान में ढाका की मलमल 'गंगेतिका' नाम से बिकती थी। इसी तरह रोम में भी भारत में बनी चीजों की भारी खपत थी। मध्यपूर्व के देशों में रेशमी कपड़ों, जरी के काम, कीमती पत्थरों और धातु की बनी वस्तुओं की माँग सदैव रहती थी। चूंकि ये देश उस समय औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े थे, इसलिए भारत उनसे आयात नहीं करता था। भारतीय व्यापारियों को निर्यात के बदले में अक्सर सोना और चाँदी मिलता था, जिसका अर्थ है कि सोने का देश के भीतर की ओर प्रवाह। देश की समृद्धि का यह मुख्य कारण बना। पहली सदी में 'प्लिनी' नामक लेखक ने शिकायत की थी कि भारतीय सामग्री के प्रयोग के कारण रोमन साम्राज्य से सोना बाहर की ओर खिंचता चला जा रहा है।

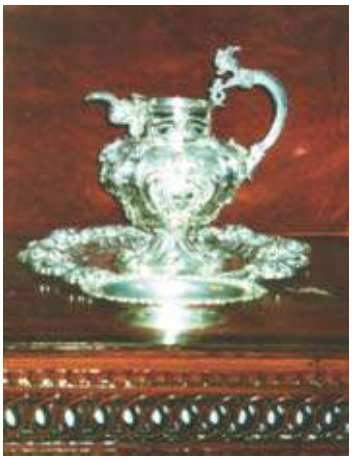
धातु की बनी वस्तु

गतिविधि

चर्चा करें–प्राचीन काल में भारत विदेशों से माल का आयात बहुत ही कम करता था। क्यों ?

प्राचीन काल में व्यापार :– व्यापार की दृष्टि से हम इस कार्य को दो भागों में बाँट सकते हैं –

(1) देशी व्यापार तथा (2) विदेशी व्यापार

देशी व्यापार में व्यापार का कारोबार देश की सीमाओं के भीतर किया जाता है तथा विदेशी व्यापार में यह कारोबार एक देश से दूसरे देश के बीच में किया जाता है। देशी व्यापार को घरेलू व्यापार भी कहते हैं।

अब हम देशी व विदेशी व्यापार तथा उसके व्यापारिक मार्गों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्राचीन भारत में देशी व्यापार के व्यापारिक पथ

देशी व्यापार के लिए प्राचीन भारत में दो प्रमुख मार्ग थे – (1) उत्तरा पथ (2) दक्षिणा पथ। इसका उल्लेख महाभारत एवं बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों में भी मिलता है। उत्तरा पथ भारत के उत्तरी के भागों को जोड़ता है तथा दक्षिणा पथ भारत के दक्षिण के हिस्सों को जोड़ता है। उत्तरापथ ताम्रलिप्ति (बंगाल का पश्चिमी क्षेत्र) से शुरु होता था तथा पाटलीपुत्र, वैशाली, कुशीनगर, श्रावस्ती से होता हुआ वर्तमान उत्तरप्रदेश के हस्तिनापुर से गुजरता था। यहाँ से पंजाब–दिल्ली होते हुए हिमालय की तलहटी से गुजरता था। आगे यह कश्मीर घाटी को छूते हुए पंजाब में तक्षशिला होते हुए पुष्कलावती (वर्तमान पेशावर–पाकिस्तान) को पार करते हुए अफगानिस्तान को जाता था। अफगानिस्तान से यह रास्ता काबुल को पार करता हुआ एशिया में बल्ख तक पहुंचता था। पंजाब से एक रास्ता सिंध को भी जाता था।

प्राचीनकाल में विंध्य पर्वतमाला के दक्षिणी भाग को दक्षिणा पथ के नाम से जाना जाता था। इस तरह दक्षिणा पथ एक रास्ते का नाम भी था और एक भू–भाग का भी। दक्षिणा पथ दो दिशाओं में जाता था। एक दिशा महाराष्ट्र में गोदावरी नदी के तट पर बसे शहर पैठण से बिहार के मुख्य शहरों की तरफ जाता था। दूसरी दिशा में पैठण से पश्चिमी समुद्री तट की तरफ से गुजरता हुआ मध्यप्रदेश में नर्बदा के तट पर महेश्वर व उज्जैन को पार करता हुआ आगे वह गोनाद्धा (गोंडों का प्रदेश) से निकलकर भिलसा, कोसम, साकेत (अयोध्या), श्रावस्ती, सेताण्या, कपिलवस्तु, पावापुरी, भोग्नगारा, वैशाली और राजगृह होते हुए जाता था। दक्षिणा पथ अनेक पहाड़ी श्रृंखलाओं से होकर गुजरता था। इन पहाड़ों पर रहने के लिए व्यापारियों ने अनेक गुफाएँ बना ली थी।

व्यापार सड़क और नदी के रास्ते होता था। नावों के भी काफिले चलते थे। चम्पा और मिथिला से व्यापारी नावों में सामान लादकर ताम्रलिप्ति (बंगाल) ले जाते थे।

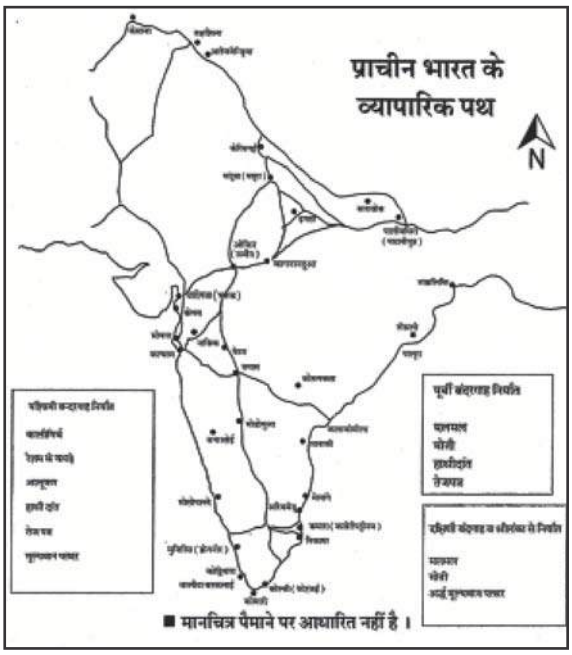

पढ़े एवं बताएँ :–

1. उतरापथ व दक्षिणापथ किसे कहते हैं ?
2. देशी व विदेशी व्यापार में क्या अन्तर है ?
3. एशिया के बल्ख तक पहुँचने के लिए मार्ग कहाँ से होकर जाता था?

प्राचीन भारत में विदेशी व्यापार

हम यह पढ चुके हैं कि औद्योगिक दृष्टि से भारत उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ तक बहुत ही अधिक उन्नत अवस्था में था। यहाँ के शिल्पकार न केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे बल्कि पर्याप्त मात्रा में यहाँ से वस्तुओं का निर्यात भी करते थे। मलमल, छींट, जरी के वस्त्र, लोहे व इस्पात की वस्तुएँ, तम्बाकू, नील, शॉल, रेशम व रेशमी वस्त्र एवं गरम मसालों का भारत से काफी मात्रा में निर्यात किया जाता था। इसके बदले विदेशी व्यापारी हमें जवाहरात, सोना तथा चाँदी देते थे।

इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि प्राचीन काल में भारत का विदेशी व्यापार दुनिया के अनेक देशों से था। जिसमें मुख्य है – बेबीलोन, मिश्र, जावा, सुमात्रा, रोम, आदि।

मध्य भारत के जंगलों से जहाज बनाने के लिये लकड़ी निर्यात की जाती थी। खेतड़ी (राजस्थान) की खदानों से ताम्बा भेजा जाता था। मेवाड़ से जस्ता भेजा जाता था। हीरे, जवाहरात, रेशम के कपडे व अन्य जवाहरात रोम भेजे जाते थे। काली मिर्च की यूरोप में बहुत माँग थी। फारस की खाड़ी के दक्षिणी तट पर स्थित नगर ताम्बा, चन्दन तथा सागवान खरीदते थे।

प्राचीन विदेशी व्यापारिक मार्ग

इथोपिया (अफ्रीका) से हाथी–दाँत व सोना भारत आता था। बाहर से हमारे देश में आयात होने वाली सूची में घोड़े प्रमुख थे। तीसरी ईस्वी सदी जब रोम का साम्राज्य कमजोर पड़ने लगा तो भारत के व्यापारी पूर्वी एशिया से ज्यादा व्यापार करने लगे। सुवर्णदीप, कम्बोज आदि स्थानों पर भारतीय बस्तियाँ बसने लगी। चीनी लेखकों ने हिन्द–चीन व हिन्देशिया में भारतीय व्यापारियों की बस्तियों का उल्लेख किया है। पूर्व में कलिंग देश के व्यापारी भी पूर्वी एशिया में जाते थे।

प्राचीनकाल में अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारत के रेशमी व सूती उत्पादों का ही दबदबा था। आर्मिनियन और फारसी सौदागर पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य ऐशिया के रास्ते यहाँ की चीजें लेकर जाते थे। यहाँ के बने महीन कपड़ों के थान ऊँटों की पीठ पर लादकर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों और रेगिस्तान के पार ले जाते थे। गुजरात के तट पर स्थित सूरत बन्दरगाह के जरिये भारत खाड़ी और लाल सागर के बन्दरगाहों से जुड़ा हुआ था। कोरोमंडल तट पर मच्छलीपट्टनम् और बंगाल में हुगली के माध्यम से दक्षिणी–पूर्वी एशियाई बन्दरगाहों के साथ खूब व्यापार चलता था ।

भारत का विदेशी व्यापार मुख्यतः भू–मार्ग से तथा हिन्द महासागर–अरबसागर के रास्ते समुद्री मार्ग से अरब देशों तक होता था। विदेशी व्यापारियों द्वारा समुद्री रास्ते की खोज के बाद तो अनेक पाश्चात्य जगत् की कम्पनियाँ भारत के साथ व्यापार करने लगी, जिसमें मुख्यतः फ्राँस, डच एवं ब्रिटिश कम्पनियाँ थी।

आयात–निर्यात किसे कहते हैं ?

विदेशी बाजारों से माल खरीदने को माल का आयात करना कहते हैं तथा विदेशी बाजारों में अपने देश के माल को बेचना निर्यात कहलाता है।

गतिविधि

ऐसी वस्तुओं की सूची बनाइए जिसमें प्राचीन काल में भारत की वस्तुओं की विदेशी बाजारों में माँग रहती थी।

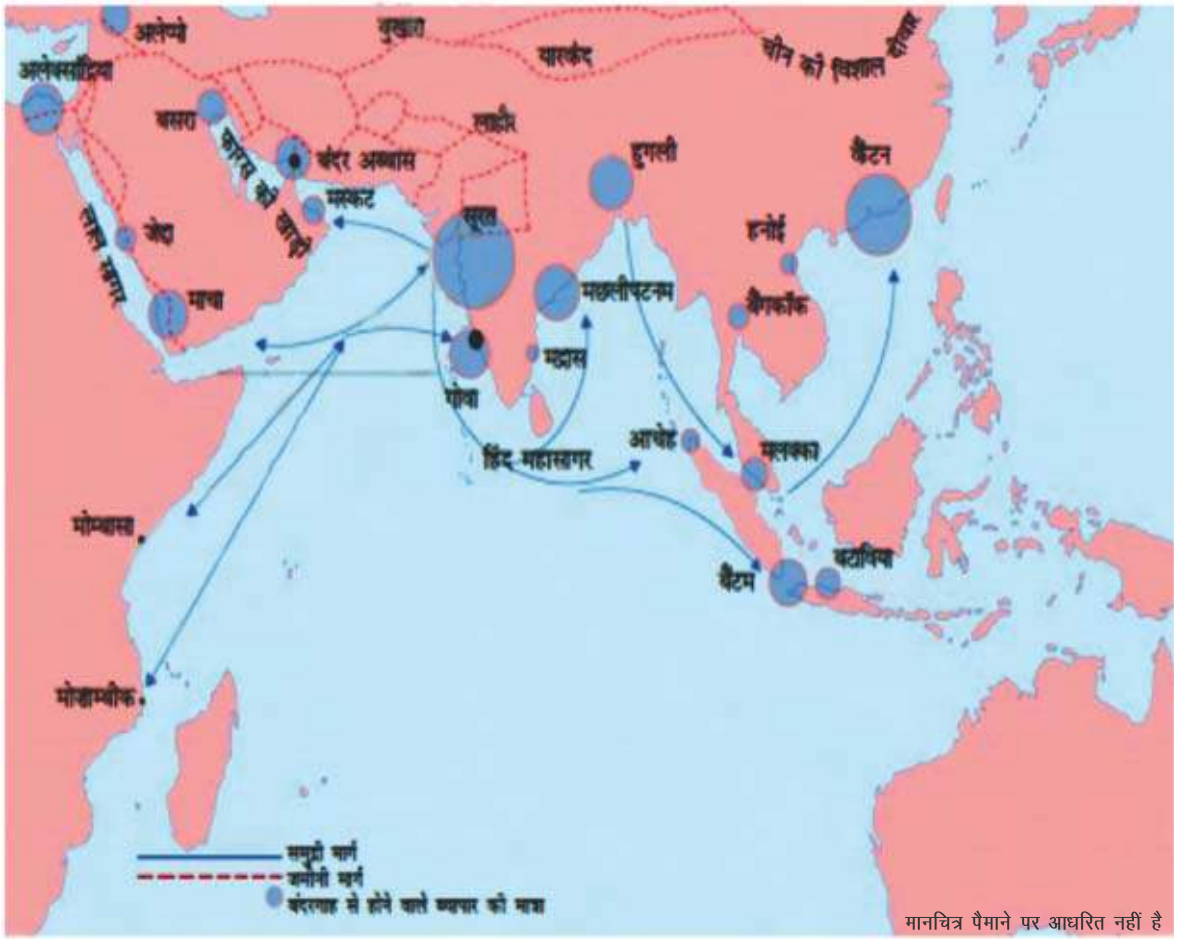

भारत को शेष विश्व से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग

गतिविधि

उपरोक्त मानचित्र देख कर बताएं कि भारत को शेष विश्व से जोड़ने वाले जल व थल के व्यापारिक मार्ग कौन–कौन से थे?

शब्दावली

लौह प्रगलन भट्टियाँ	–	लोहा गलाने की भट्टियाँ
काफिला	–	समूह
सुवर्ण द्वीप	–	वर्तमान सुमात्रा

अभ्यास प्रश्न

1. यह कथन किसने कहे ?

   (1) भारतीय किसान एक औसत अंग्रेज किसान की तरह अच्छा है और कुछ मायनों में तो इससे भी श्रेष्ठ।

   (2) जिस समय पश्चिम यूरोप में असभ्य जातियाँ निवास करती थी, भारत अपने शासकों के वैभव तथा शिल्पकारों की उच्च कोटि की कला के लिए विख्यात था।

   (3) भारतीय सामग्री के प्रयोग के कारण रोमन साम्राज्य से सोना बाहर की ओर जा रहा है।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (कोष्ठक में दिए शब्दों की सहायता से)

   (गेंहूँ , पानी का जहाज, हाथीदान्त व सोना, सोना व चाँदी, ईसवाल (उदयपुर))

   (1) यहाँ का बहुत सा माल विदेशों में निर्यात किया जाता था तथा निर्यात के बदले मुद्रा के रुप में ..... लिया जाता था।

   (2) ..... की खेती यहाँ पर इंग्लैण्ड व यूरोप से कई शताब्दी पूर्व प्रारम्भ की थी।

   (3) ..... बनाने की कला में भारत यूरोप से आगे था।

   (4) ..... में मौर्यकालीन लोह प्रगलन भट्टियों के अवशेष प्राप्त हुए है।

   (5) ईथोपिया (अफ्रीका) से ..... भारत आता था।

3. प्राचीन काल में भारत से कौन–कौन सी वस्तुएँ निर्यात की जाती थी ?

4. देशी व विदेशी व्यापार किसे कहते हैं ? प्राचीन काल में भारत का कौन–कौन से देशों से विदेशी व्यापार होता था ?

5. उत्तरा पथ व दक्षिणा पथ से क्या आशय है ? उत्तरा पथ में आने वाले स्थान कौन–कौन से हैं ?

6. दक्षिणा पथ के अन्तर्गत आने वाले मार्ग कौन–कौन से हैं ?

7. भारत के मानचित्र पर उत्तरा पथ एवं दक्षिणा पथ को चिन्हित करें।

गतिविधि

1. प्राचीन काल में भारतीय वस्तुओं की विदेशों में मांग बहुत अधिक रहती थी। मानचित्र देखकर बताएँ कि ऐसे देश कौन–कौनसे थे ?
2. विभिन्न पुस्तकों में रोमांचकारी समुद्री यात्राओं को पढ़ें एवं ऐसी घटनाओं को संकलन करें। अपने अध्यापक एवं अभिभावक से इस कार्य में मदद प्राप्त करें ।